आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 276 | ARYA SABHA MAURITIUS | 8th Sept. to 28th Sept. 2013

PATITON, DUKHIYON, ASAHĀYON AUR GARIBON KĀ OUDHĀR KARNĀ, EK MAHĀN KARTAVYA MĀNAVTĀ KÉ PRATI

'Aider et réhabiliter les exclus, les pauvres et les laissé-pour-compte dans la société', est un devoir sacré envers l'humanité.

Om ! Outa dévā avahitam dévā ounyathā pounaha.
Outāgash chakrousham dévā dévā jivathā pounaha.

Rig Véda 10/137/1

Glossaire / Shabdārtha

Dévo / dévāha – éducateur, sage, savant, érudit, élite, **avahitam** – un exclu, un paria – une personne dont la conduite et les activités sont méprisables, inférieures et sans valeurs sur le plan moral; ou une personne qui manque de savoir – vivre et qui est exclue de la société, **outa** – aussi, **pounaha** – de nouveau, **ounayathāha** – libérer quelqu'un de sa conduite et de ses activités répréhensibles, et le mettre sur le bon chemin de la vie ou sur la voie de son salut, **āgaha chakrousham** – tous ceux qui commettent des péchés, **jivayathāha** – libérez-les de l'emprise du mal (péchés), sauvez leurs âmes et initiez – les à une vie saine, parfaite et heureuse.

Interprétation / Bhāwārtha

Dans ce mantra/verset du Rig Véda le Seigneur s'addresse aux sages, aux éducateurs et aux élites : 'Sachez que dans ce monde n'importe quel être humain ne peut éternellement demeurer un paria ou un exclu. L'image d'aucun homme ne peut rester ternie indéfiniment, c'est-à-dire, qu'il ne vivra pas tout le temps dans la disgrâce ou dans l'ignominie. La personne, la plus indésirable de cette terre, peut se transformer en un saint si des conditions favorables se présentent dans sa vie.'

"O les sages ! Par votre compétence et votre attitude avenante", dit le Seigneur, 'vous pouvez sauver et donner une nouvelle vie voire une nouvelle orientation à celui qui succombe à la tentation et commet des péchés.

Le plus grand pécheur ou malfaiteur, avec l'aide de votre approche charismatique ou votre disposition innée (naturelle), peut devenir l'homme le plus cultivé et le plus respecté du monde.

Quand quelqu'un devient un exclu de par son comportement et de ses actions, il sombre dans le désespoir en croyant que personne ne pourra le délivrer de cet enfer. Mais il y a toujours une lueur d'espoir aussi longtemps qu'il y a le soutien des sauveurs comme vous dans son environnement.

O les éducateurs et les sages ! Vous êtes munis de toute la compétence ou les qualités requises, c'est-à-dire, la lumière spirituelle et intellectuelle, la foi inébranlable en vous-même, la perspicacité, la clairvoyance, l'expérience de la vie, la serviabilité, la magnanimité et la miséricorde. Celles-ci constituent votre force morale pour relever tous les défis qui surgissent.

Vous êtes nés pour servir, pour protéger, pour faire du bien aux autres. Il vous incombe le devoir de réhabiliter les exclus/les parias dans la société. Encore c'est vous qui devez sauver à temps ceux qui se sentent accablés de péchés, et leur donner une nouvelle direction salutaire de la vie.

Il faut bien comprendre que toute personne qui meurt, renaît. Son âme assume un nouveau corps selon ses mérites. Mais, en ce qu'il s'agit de l'âme, elle est immortelle, en d'autres mots elle ne meurt jamais. C'est le corps physique qui est périssable.'

Dans le contexte de ce mantra, le Seigneur nous dit aussi que toute personne qui s'adonne aux péchés, aux crimes ou à l'immoralité, anéantit son âme ('wo ātmā hanana kartā hé'en Hindi). Cela veut dire qu'elle la déshonore, l'abaisse, l'affaiblit ou la dévalue.

'O mes enfants !' Nous conseille le Seigneur, 'vous avez le potentiel et tous les atouts d'éviter la mort de votre âme. Le seul moyen d'atteindre ce but : c'est de mener une vie active, décente, saine, et spirituelle.

'Que personne ne perde l'espoir dans la vie; Que l'on se soumette à la volonté du Seigneur', nous rassurent nos ainés, dans toute leur sagesse.

"O les sages !" conclut le Seigneur. ''Je suis entièrement confiant que vous aller récupérer et réhabiliter les pécheurs, les exclus et les laissé-pour-compte. Guidez-les vers la voie de la délivrance et vous sauverez leurs âmes."

N. Ghoorah

आत्महत्या महापाप है ।

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न, उप-प्रधान आर्य सभा मॉरीशस

आपको मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। और साथ ही आपको अकाल मृत्यु के बारे में भी सोचना ही नहीं चाहिए। केवल परमात्मा का काम है सोचना कि आपको धरती पर कब भेजना है और कब वापस ले जाना है। भेजने का नाम ही जन्म देना है और ले जाना मृत्यु है। यह सभी मानते ही नहीं बल्कि सभी जानते हैं। हम नहीं जानते हमें केवल कर्म करना है फल देना भगवान के वश में है। आत्महत्या करना किसी भी धर्म में मान्य नहीं है। भगवान के काम में हमें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं। वह जानता है क्यों हमें जन्म देकर इस लोक में भेजा है। हमें मौका दिया है किये गये कर्मों के संचित फल भोगने के लिए और बुरे कर्मों को भोगने के लिए। आत्माहत्या करके हम सोचते हैं जिस काम से बचने के लिए आत्म हत्या करते हैं उससे छूट जायेंगे। यह असम्भव है। उलटे और भयंकर पाप बढ़ जाते हैं। आत्म हत्या करके अपना भाग्य बदतर से बदतम कर देते हैं, जहाँ से छूटना और कठिन हो जाता है। हाँ, अस्थायी छुटकारा मिल जाता होगा पर स्थाई रूप से नहीं। शारीरिक पीड़ा से बच जायेंगे पर आप की आत्मा और दूषित हो जाएगी। इसी लिए तो ईशोपनिषद् ने कहा, **'असुर्यानाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः। तांस्ते प्रेत्यापिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः'।**

जो कोई आत्मा के घातक हैं वे मर कर गहरे अँधेरे से आच्छादित हुए प्रकाश रहित नाम वाले जो लोक हैं उनको प्राप्त होते हैं।

सम्पादकीय

नारी-जीविका के साधन

हमारे देश में बड़े-बड़े स्थानीय एवं विदेशी उद्योगपतियों के अपूर्व सहयोग से औद्योगिक क्षेत्र में भारी विकास हो रहा है। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर भारी पूँजी लगाकर अनेक प्रकार के उद्योग कायम किए हैं। शक्कर उद्योग के अलावा आज मॉरीशस में कई ऐसे उद्योग स्थापित हैं, जिनमें हज़ारों बेरोज़गारों को जीविका मिल रही है। इन औद्योगिक संस्थानों के माध्यम से कितने दयनीय परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। इन परिवारों के साथ-साथ समाज और राष्ट्र का उत्थान होता जा रहा है।

हमारी सरकार देशी और विदेशी पूँजीपतियों को अपनी संपत्ति लगा कर यहाँ उद्योग-धन्धे स्थापित करने के लिए हमारी सरकार तरह-तरह की सुविधाएँ प्रदान करते आ रही है तथा उन्हें प्रोत्साहित करने में तत्पर रहती है, ताकि वे अपने औद्योगिक क्षेत्र में विकास करते रहें और बेरोजगारों को रोज़ी मिलती रहे। हमारी सरकार के पूरे सहयोग और कर्मचारियों की कड़ी मेहनत से कई उद्योग-धंधे विकसित होते गये, उधर कई उद्योगों में उतार-चढ़ाव आने से हानि भी हुई, फिर भी उद्योग-मन्त्रालय अन्य उद्योगपतियों को आर्थिक मदद देकर प्रोत्साहित करता जा रहा है, ताकि बेरोज़गारी की समस्या न बढ़े एवं राष्ट्र की आर्थिक स्थिति न बिगड़े। इसी कारण वर्षों से इस देश में एक तरफ़ कई उद्योग-धन्धे बन्द हुए तो दूसरी तरफ़ अनेक बड़े-बड़े औद्योगिक संस्थान भी खुलते गए।

आज बड़े-बड़े उद्योगों में तो हज़ारों कर्मचारी कार्यरत हैं फिर भी कई हज़ार लोग बेकार बैठे हैं। उन बेरोज़गार लोगों की मदद करने के लिए हमारी सरकार ने घरेलू उद्योग स्थापित करने की परियोजनाएँ बनाई हैं – जिन परियोजनाओं में करोड़ों रुपयों का निवेश कर रही है। उद्योग एवं सहकारिता मन्त्रालय द्वारा देश में छोटे-मध्यम उद्योग धंधे स्थापित करने में सहयोग दिया जा रहा है। नवीन तकनीकी एवं साधनों की जानकारी दी जा रही है। उन परिवारों को बैंक द्वारा आर्थिक मदद देकर घरेलू-उद्योग में रुचि बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस सुनहरे मौक़े का फ़ायदा उठाकर बहुत से छोटे-छोटे धंधे जन्म ले रहे हैं, जिन कारोबारों द्वारा घर पर बैठी महिलाएँ विविध प्रकार के द्वारा जीविका पा रही हैं। उत्पादनों इन परियोजनाओं के माध्यम से ग़रीब परिवारों में बेकारी समस्या घटती नज़र आने लगी है।

आज इस देश की ग़ैर हिन्दू महिलाएँ छोटे-माध्यम उद्योग धन्धों में रुचि दिखाकर अपने अपने हुनर प्रदर्शित कर रही हैं। SMEDA, PME, SME आदि संस्थाओं की ओर से आयोजित कार्यशालाओं में भाग लेकर कई प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त कर रही हैं। आज हमारे देश की कई महिलाएँ बैंक से उधार लेकर अपना उद्योग बढ़ाकर शीघ्र ही उन्नति कर रही हैं। उनकी मेहनत और योग्यता देखकर सरकार उन हुनरमंदों की सहायता कर रही है।

यह देखा जा रहा है कि हमारी हिन्दू महिलाएँ घर पर बेकार बैठी रहती हैं। उनमें से कम ही माता-बहनें घरेलू उद्योग पर ध्यान दे रही हैं । कितनी माता-बहनें यों ही समय गवाँ रही हैं। हम उनसे आग्रह करते हैं कि वे भी घरेलू उद्योग की ओर अग्रसर हों। सरकार द्वारा दी गई सारी सुविधाओं से लाभ उठाएँ, अपनी मेहनत, योग्यता, बुद्धिमत्ता दिखाकर वे भी अन्य महिलाओं की तरह छोटे-छोटे कारोबारों में दिलचस्पी दिखाएँ। आपकी मेहनत, योग्यता और कारीगरी अवश्य ही जीवन में रंग लाएँगी। लक्ष्मी का निवास हमेशा आपके घरेलू उद्योग में रहेगा और आप उन्नतिशील होती जाएँगी।

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि आप भी छोटे-मध्यम उद्योग चलाने का प्रयत्न करें। अपनी कारीगरी प्रदर्शित करें। आप भी उद्योग मन्त्रालय से संपर्क स्थापित करके SMEDA PME, SME आदि संस्थाओं से लाभ उठाएँ, शीघ्र ही आप उन्नतिशील होते जाएँगे। आज घर पर योंही बेकार बैठने का ज़माना नहीं है, अगर आपको कोई नौकरी नहीं मिलती तो आप इन छोटे-मोटे धन्धों की ओर कदम बढ़ाएँ, ईश्वर की कृपा तथा आपकी कड़ी मेहनत से जीने का साधन मिल ही जाएगा।

बालचन्द तानाकूर

शती मनाई गई

एस. प्रीतम

शनिवार दिनांक ३१ अगस्त २०१३ को वाक्वा इन्दिरा गांधी सांस्कृतिक केन्द्र फेनिक्स में दोपहर के १.०० बजे से ३.०० बजे तक। आर्यसमाज की स्थापना की शताब्दी मनाई गई। समारोह के मुख्य अतिथि गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम माननीय श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.ओ.एस.के, जी.सी.एस.के थे। वे सपत्नीक वहाँ पधारे थे । उनकी धर्मपत्नी भी साथ थी। आर्य सभा मोरिशस के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर श्रीमती सहित, मान्य प्रधान डा० निऊर, महामन्त्री हरिदेव रामधनी, प्लेन विलियेम्स ज़िला परिषद् के प्रधान श्री रवीन गौड और अन्य अन्तरंग सदस्य। इन सब महानुभावों के अलावा और अन्य गण्यमान्य लोग भी उपस्थित थे जिनमें भारतीय उच्चायुक्त के प्रतिनिधि श्री मीमांसक आदि ।

कार्य का आरम्भ ईश वंदना से हुआ। तदुपरान्त वाक्वा आर्य समाज के प्रधान श्री दाताराम मातापलत ने अँग्रेज़ी में एक सारगर्भित भाषण दिया जिसमें समारोह के उद्देश्य, तैयारी और जिन जिन सहयोगियों ने उत्सव को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

विविध कार्यक्रम पेश किए गए जिनमें वाक्वा समाज के बालकों ने रंगीन प्रोग्राम पेश किया, भजन मण्डली की ओर से श्रीमान् पत्तर और श्रीमती मातापलत ने अपनी मधुर एवं सुरीली आवाज़ से श्रोताओं का मन मोह लिया और दूसरी तरफ़ इन्दिरा गांधी सांस्कृतिक केन्द्र के गायकों एवं नर्तकियों ने श्रोताओं एवं दर्शकों को अपने दिलचस्प प्रदर्शन से स्तब्ध कर दिया।

राष्ट्रपति ने आदतानुसार अपने लघु भाषण में आर्य समाज द्वारा सौ साल के किए गये कार्यों की एक झलक दी और कहा मोरिशस की सभी जनता मानती है कि यदि आज मोरिशस में खुशहाली है तो इसमें आर्य सभा का बहुत बड़ा हाथ है। खासकर अगर आज हम शिक्षा के क्षेत्र, महिलाओं और लड़कियों को समाज में सम्मान प्राप्त है तो आर्य समाज को इसका श्रेय जाता है।

सभा प्रधान बालचन्द तानाकूर एवं उप-प्रधान सत्यदेव प्रीतम को लोगों को सम्बोधन करने का मौक़ा मिला। दोनों ने वाक्वा समाज की स्थापना और उसके कार्यों पर अधिक ज़ोर दिया। दोनों ने बताया कि अगर २० वीं सदी के दूसरे दशक की शुरुआत में डा० चिरञ्जीव भारद्वाज न आते तो क्या १०० साल पहले वाक्वा समाज स्थापित होता? इस पर संदेह किया जा सकता है। डा० चिरञ्जीव ने जो सेवा आर्यों के बीच की उसी की बदौलत हम उन्हें याद करते हैं और अगली शताब्दी भी मनाएँगे तब भी उनकी और उनकी धर्म पत्नी सुमंगली देवी को हमारी आने वाली पीढ़ी याद करेगी।

इसी मौक़े पर समाज की ओर से प्रकाशित एक पत्रिका का राष्ट्रपति जी महोदय के कर कमलों द्वारा लोकार्पन किया गया। उसी अवसर पर चन्द सामाजिक सेवकों को सम्मानित भी किया गया।

गायत्री आरती

पंडित बन्झू

ओ३म् जय गायत्री माता, जय जय गायत्री माता ।
जो भी शरण में आता, सब कुछ वो पाता ।।
ओ३म् .....

हाथ जोड़ झुकाए मस्तक, द्वार तेरे आए,
मैया द्वार तेरे आए,
शुद्ध करो मम हृदय, हम तुझ को हैं ध्याये ।।
ओ३म् .....

वेद शास्त्र उपनिषद सब ही, तुझ को हैं गाये मैया तुझ को ।
तेरी कीर्ति जो गाये, मुक्ति है वो पाये ।।
ओ३म् .....

शुद्धियों से भी अति शुद्ध, मैया तू है महा शुद्धि मैया तू है
हर मलिनता मिटाकर, निर्मल करदे बुद्धि ।।
ओ३म् .....

पापियों को भी तारने में तू, करती नहीं देरी मैया करती
सुबह-शाम तुझे ध्यान करूँ, करूँ आरती मैं तेरी ।।
ओ३म् .....

जल यह, नभ यह, पशु-पक्षी, तुझे ध्यावे सभी प्राणी मैया ध्यावे
सबके है मन में व्यापे, तू वेदों की वाणी ।।
ओ३म् .....

तेरी शरण में जो भी आये, वो होते हैं अभय मैया वो,
शत्रु उसके मिट जाते, होती उसकी विजय ।।
ओ३म् .....

ARYA SABHA MAURITIUS

Vacancy

Post : Assistant Manager
Qualifications : Applicants must be holders of the Higher School Certificate (H.S.C) and possess a Diploma in Management from a recognized institution. A sound knowledge of Hindi, English and Indian philosophy would be essential.
Duties :
(i) To assist the Manager in the general administration and day to day management of the affairs of the Sabha;
(ii) To be responsible to the Manager / President/General Secretary and Treasurer in formulating new projects of the Sabha;
(iii) To monitor the implementation/execution of approved projects;
(iv) To assist in the proper keeping of record of the documents, files, stock, equipments and all fixed and current assets of the Sabha;
(v) To assist in the organization and exercising control on the activities of the staff;
(vi) To coordinate the activities of Purohits, Sub-committees, Arya Jila Samitis and the Institutions of Sabha;
(vii) To assist in the upkeep of the Library, timely publication and despatch of Aryodaye and other correspondence concerning the management;
(viii) To assist in the keeping of record of representations and grievances, and to report thereon for appropriate action;
(ix) To assist in liaising with outside agencies regarding matters relating to the Sabha;
(x) To carry out such other cognate duties as may be assigned by the Management Committee.

The selected candidate will be remunerated according to qualifications on a flat rate on monthly basis.

Applications should reach the Secretary, Arya Sabha Mauritius, 1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis on or before 30th September 2013.

The Institution reserves the right not to call any applicant for an interview.

मॉरीशसीय आर्य समाज के सौ साल

डॉ० चिरंजीव भारद्वाज का द्वितीय मानपत्र

प्रह्लाद रामशरण

डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज के भारत गमन के बाद कुछ समय तक रामशरण मोती ने आर्यसमाज के प्रचार कार्य को जारी रखा। १९१४ के आरम्भ में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का आगमन हुआ। स्वामी जी ने जनवरी १९१४ में पाम्प्लेमूस में आर्य समाज की स्थापना की। डॉक्टर भारद्वाज का पुनः आगमन हुआ और कुछ महीनों, वे स्वामी जी के साथ वैदिक धर्म का प्रचार में लगे रहे। १७ अक्टूबर १९१४ को डा० चिरंजीव ने नूवेल देकुर्वत आर्यसमाज की स्थापना की और २२ नवम्बर १९१४ को वे सपरिवार भारत लौट गए। जाने से पूर्व उन्हें एक भाव पूर्ण मानपत्र दिया गया।

मॉरीशस आर्य मंदिर,पोर्ट लुई ता० २२.११.१९१४ ई०

मॉरीशस आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज जी एफ.आर.सी.एस.,डी.पी.एच को समर्पण ।

श्रीमती मॉरीशस आर्य प्रतिनिधि सभा के संपूर्ण सभासदों की ओर से आपका यहाँ से द्वितीय और अन्तिम स्वदेश यात्रा के निमित्त निम्नलिखित निवेदन आज्ञा पूर्वक पढ़कर आपको अर्पण करता हूँ।

आर्यसमाज के शुभ चिंतक बैरिस्टर मणिलाल डॉक्टर महोदय जी की अनुमति पूर्वक पोर्ट लुई आर्य समाज के सुजनों की प्रार्थना और आवाहन करने पर आपने अपनी महती कृपा कर विगत दिसम्बर, १९११ ईस्वी को यहाँ शुभागमन किए।

उस समय यहाँ के आर्य गण अपने नियमों, पद्धति पर चल रहे थे। तथान्य धार्मिक विषयों में नितांत अनभिज्ञ थे। आपने आते ही हमको नियमों पर चलकर उन्नत शिखर पर चढ़ने का सोपान लगाकर सुगम पथ दर्शाया। आपका आगमन तथा शुभाचरण युक्त गुणों से हमारा मनोरथ सिद्ध हुआ जिसकी हमको बड़ी आवश्यकता थी। आपने अन्य विषयों आदि की शिक्षा दी। इससे हमारी नैतिक और धार्मिक उन्नति हुई। वर्तमान समय में यहाँ २१ समाज क़ायम हुए हैं जो कि सबके सब आपकी स्थापित की हुई है। मॉरीशस आर्य प्रतिनिधि सभा से संबंध रखते हैं। एतदुन्नति करने के लिए आप स्वयम अपनी शूरता, दृढ़ता और स्पष्टता से किसी समय किंचित मात्र पीछे नहीं रहे हैं, वरन सदा खुले मैदान में वैदिक नाद करते हुए अपने शुभ गुणों और धर्माचरण का प्रसारण करने में अपना पूर्ण बुद्धि और विद्या व्यय किए हैं।

यह वार्ता अभी हमारी समितियों में ताज़ा है कि आपने एक महान् यज्ञ में प्रथमाहुती दी है। अर्थात् शाँ दे मार्स भूमि क्रय करके, मंदिर अनाथालय तथा पाठशाला इत्यादि निर्माण करने के लिए मॉरीशस आर्य प्रतिनिधि सभा का चाटर भेजा गया था। सरकार में और वहाँ पर भी वैदिक धर्म के शत्रुओं ने विरोध किया। आपके उद्योग से श्री आर्य परोपकारिणी सभा स्थापित हुई और नियमानुसार सरकार में रजिस्ट्री हुई और हिन्दुस्तानी प्रेस के चलने पर भी पूर्णाश्रय आपने किया। यह बात हम सब को चिरकाल पर्यत स्मरण रहेगी।

आर्य सामाजिक काम करने के कारण इतर धर्मियों ने आप की व्रती (सम्मान) में बड़ी हानि करने में कुछ उधार नहीं छोड़े। परन्तु स्वार्थ शब्द की ओर आपने धीरपन धारण किया तथा किंचित मात्र ध्यान न देकर कुछ ग्लानि नहीं कि प्रत्युत विशेष रूप से वैदिक धर्म प्रचार कर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के मिदान में पूर्ण प्रयत्न करते रहे। इससे जो आपको आर्थिक हानि उठानी पड़ी से हम सभी को भली भाँति ज्ञात है।

गत् साल, आप यहाँ से कुछ दिनों के लिए आर्यावर्त्त गए थे इसमें संदेह नहीं कि आपने हमारे हितार्थ यहाँ पर भी बहुत कुछ किए। श्री महात्मा मुंशीराम की आर्य समाजी के नेताओं से हमारा आवश्यकता प्रयोजन निवेदन किया था। परिणाम में हमारी पूण्यभाग्य है कि श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हमारे मध्य में विराजमान है। यह अपूर्व लाभ हमको आपके ही श्रम से प्राप्त हुआ है।

यह सब कुछ करके जब आप हमको छोड़कर चले जाते हैं, इस बात का स्मरण करते ही हम शोक में निमग्न हो जाते हैं और हृदय विदीर्ण हो जाता है। आपका हार्दिक प्रेम हमको भूलता नहीं। हम आशा करते हैं कि आप हम सबों को कदापि विस्मरण नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमंगली देवी जी की प्रशंसा सहस्त्र मुख से भी नहीं हो सकती। आपने स्थितियों में बड़ी उन्नति की है। सभा आपको परमोपकार मानकर धन्यवाद देते हैं। अंततोगत्वा, हम आपकी एवं आपकी सह पत्नी का उपकार मानकर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे सर्वरक्षक ! आप श्री डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज जी को सपरिवार निर्विघ्नता से आनंद पूर्वक आर्य व्रत पहुँचाए।

इति! ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति ।

माधोलाल हरबंस *मंत्री*
प्रभु भोला *प्रधान*

(मॉरीशसीय आर्य समाज का इतिहास के सौजन्य से उद्धृत)

HINDI LEKHAK SANGH

OFFICE BEARERS 2013-2015

Hon. President - Mr Indradev Bholah Indranath,P.B.H, Honorary Member – Prof. Pushpita Awasthi (Holland), Advisers - Dr Vidoor Dilchand, Dr Sarita Boodhoo, President – Dr Laldeo Ancharaj, Vice-Presidents – Mr Bissoonduth Maudhoo, Mrs Kalpana Laljee, General Secretary – Mrs Bidwantee Ajodheea Teeluck, Ass. Secretary – Mr Kewal Naeck, Treasurer – Mr Deoduth Brijmohun, Asst. Treasurer – Mrs Prempatee Poonith, PRO – Pt. Mooklal Lokmun, Pt. Shyam Daiboo, Auditors – Miss Champawatee Bumma, Mr Suresh Ramnauth, Members – Messrs :– Keshawduth Chintamunnee, Bhoomeshwar Sonoo, Sumitra Bumma, Sitah Ramyead, Bhanumatee Nagdan, Vijaysingh Dabee, Pt. Nandeo Kalka, Lalman Basram, Savitree Ghurah, Pratima Ghurah, Maheshwaree Chintamunnee, Anandnee Biltoo, Divya Raghoo, Satyanand Nowlotta, Kaviraj Kheedoo, Sandhya Chatooree, Preeamvada Jokhun, Jhugroo Mudhoo, Mangalprasad Reejhaw, Basantee Reekhaye, Kamla Sookoo, Tarwantee Seeruttun, Balwant Nowbutsingh, Rajwantee Matadeen, Pratima Reesaul, Dhaneshwaree Seengh, Puran Gobin.

गतांक से आगे

एक अप्रतिम सेवक पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय

नारायणपत दसोई

पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय को भारत में अनेक रूपों में आर्य समाज की सेवा करने का अवसर मिला ही था। पर दबी-दबी उनके मन में विदेश में जाकर आर्य समाज की सेवा करने की इच्छा भी थी।

विदेश में जाकर आर्य समाज की सेवा करने का अवसर उन्हें तब मिला था, जब १९५० में दक्षिण अफ़्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा अपने अस्तित्व का पच्चीसवाँ साल मना रही थी। ऐसे में उन्हें उसमें शामिल होने का मौक़ा मिला था। पर वहाँ से तुरन्त आप भारत नहीं लौटे । वहाँ और कुछ महीने ठहरकर आपने आर्य समाज और वैदिक धर्म का प्रचार किया और सेवा की ।

फिर जब आप भारत लौटे तो एक साल बाद आपने फिर इन देशों की यात्रा की :– थाईलैन्ड, सिंगापुर और बर्मा । फिर भारत में कश्मीर से धूर दक्षिण तक आर्य समाज का प्रचार किया था । बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र और पंजाब में भी अनेक अवसरों पर आयोजित सम्मेलनों का आपने दिग्दर्शन भी किया था।

इसके अतिरिक्त पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय बहुभाषी भी थे। इसी से हम पाते हैं कि वह इन भाषाओं पर अधिकार रखते थे – हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी ।

फिर सन् १९५९ के अंतिम महीने के अन्त में आर्य समाज की अपूर्व सेवा करने के लिए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के हाथों द्वारा उनके सम्मान में तैयार किया गया अभिनन्दन ग्रन्थ आपको प्राप्त हुआ था।

फिर उनके द्वारा रचित ग्रन्थ, जो अंग्रेज़ी, हिन्दी और उर्दू में थे, के नाम अस्तित्ववाद, अद्वेतवाद, जीवात्मा, Philosophy of Dayanand, Vedic Culture, Worship, Reason & Religion, Superstition, नारी ताला उर्दू में मुख्य हैं।

इसके अलावा जिन और पुस्तकों की उन्होंने रचना की थी, उनके नाम इस प्रकार हैं – शंकर भाष्यालोचन, सायण और दयानन्द, राममोहनराय-केशवचन्द्र-दयानन्द, शंकर-रामानुज-दयानन्द, कम्युनिज़्म, सर्वदर्शन संग्रह, धम्मपद एक तुलनात्मक पुस्तक है। फिर सत्यार्थप्रकाश का भी अंग्रेज़ी में आपने Light of Truth के नाम से ही अनुवाद किया था। इसके अतिरिक्त आपने ऐत्तरीय ब्राह्मण और शतपथ ब्राह्मण का हिन्दी में भी अनुवाद किया था। इस्लाम के दीपक, आर्य समाज और इस्लाम उनके वे अन्य ग्रन्थ हैं, जिनकी रचना उन्होंने दक्षता से की थी और इन पुस्तकों ने प्रसिद्धि भी पायी थी।

पंडित गंगाप्रसाद ने अपने को केवल गद्य में सीमित नहीं रखा था, बल्कि काव्य-रचना भी की थी। उर्दू में ऐसी रचनाओं का एक का नाम कोसे कज़ा है। उसके साथ ही संस्कृत में भी उन्होंने जो काव्य रचा था, उनका शीर्षक आर्योदय था। यह दो भागों में पाया जाता था। इस प्रकार उनके लेखन-कार्य पर नज़र डालने पर पाया जाता है कि ट्रैक्ट को लेकर उन्होंने सौ से अधिक पुस्तकें लिख डाली थीं।

सन् १९६८ के अगस्त महीने में ८७ वर्ष की आयु पाकर वह इस संसार से परलोक सिधार गये थे। पर आर्य जगत् में एक अप्रतिम सेवक के रूप में आपने अपनी अमिट छाप अवश्य छोड़ दी थी।

गुरु माता अब नहीं रही

रामावध राम

पंडित विष्णुदयाल वासुदेव जी की विधवा गुरुवार ८ अगस्त २०१३ को चल बसी। वे नेता की निर्मात्री थीं। सभी लोग पण्डित विष्णुदयाल जी को जानते हैं, वे ८५ वर्ष तक जिए और बहुत त्याग तपस्या से मॉरीशस का निर्माण किया था। धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक कार्य में बहुत काम किये। लगभग ४०० पुस्तकें लिखकर जनता को जगाया। निष्पक्ष और निष्काम भाव से लोगों को जगाया। उनकी अधिकतर पुस्तकें वेद-ज्ञान पर आधारित हैं।

उनके सम्बंध में हमें उनके वाङ्गमय तथा जनान्दोलन से जानकारी प्राप्त होती है। वे एक निडर और सच्चे महापुरुष थे। अब प्रश्न उठता है यह सब कैसे वे कर पाये? तो उत्तर मिलता है; किसी के सहयोग और त्याग से। हर सफल और त्यागी पुरुष के पीछे, किसी न किसी का हाथ होता है। स्वामी दयानन्द को लीजिए, उनका निर्माता स्वामी वीरजानन्द जी थे। तो पण्डित जी के पीछे कौन था? विद्याध्ययन का पुरुषार्थ तो स्वयं किया। उन्होंने फिर उसके बाद जनता के लिए कौन? स्वामी दयानन्द जी तो बाल-ब्रह्मचारी थे, घर-बारे-परिवार का त्यागना पड़ा, पर पण्डित जी गृहस्थ थे, बाल-बच्चे वाले?

जहाँ तक मैं जानता हूँ, लगभग ४०-५० वर्षों तक मेरा उनका संपर्क रहा और घर पर मेरा हर मास आना-जाना रहा, यहाँ तक कि उनके घर के आस-पास के लोग, मुझे उनके पुत्र समझते थे। परन्तु मैं उनका सेवक था, उनके चल-बसने के बाद उनकी सेवा में उनकी पुस्तक बेचता था, जो उनके पुत्र सुरेन्द्र जी छपवाते थे।

उनकी पुत्रियाँ और एक पुत्र की शादी हुई। माता जी ने और उनके अनुज स्वर्गीय सुखदेव जी ने सब संभाला। उन्हें स्वतन्त्र रूप में एक ब्रह्मचारी की तरह छोड़ दिया। यहाँ तक घर चलाने का खर्च माता जी ही जानती थी। उन्हें पता नहीं खाने-पीने की चीज़ों का क्या भाव था। पण्डित जी पुस्तक के कीड़े थे। जैसे बाल शिक्षा में हैं। केवल लिखना-पढ़ना और भाषण देना उनका प्रमुख कार्य था। माता जी ने एक बार मुझसे कहा – *'बेटा तोहर गुरुजी से एक दिन लयका लोग एक रुपया मंगलक'* – जवाब मिला मेरे पास फ़िजूल ख़र्च के लिए पैसा नहीं है। जितना भी लिखूँ माता के त्याग-तपस्या पर तो बहुत कम है।

मुझे अपना पुत्र समान समझती थी। हर मास मैं उनके पाँव छूकर मानो पूरे मास का आशीर्वाद लेकर आता था। जब भी गयासिंह आश्रम जाता था तो उसके घर से गुज़र कर जाना पड़ता था। और वे मुझे भोजन खिलाकर ही जाने देती थीं।

माता जी की आत्मा को शांति दे । उनके बच्चे भी सुखी रहे । भगवान उन्हें साहस दे। ऐसी माताएँ, बहुत कम हैं, इस संसार में।

पिण्ड और ब्रह्माण्ड

पण्डित यश्वन्तलाल चुड़ामणि

ओं सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः।

ऋग० १०.१६.३

'हे मनुष्य! जब जीवात्मा शरीर को छोड़ देती है, अर्थात् मृत्यु के अनन्तर, नेत्र सूर्य को प्राप्त हो जाता है, आत्मा प्राण-वायु को प्राप्त हो जाती है, कर्मफल के अनुसार वही आत्मा नया शरीर धारण कर पृथ्वी लोक, आकाश और जलों में जाती है । वह आत्मा औषधियों और वनस्पतियों में भी जा कर फल भोगती है।'

उपरोक्त मन्त्र ऋग्वेद और अथर्ववेद में पाया जाता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उस मन्त्र का प्रयोग अन्त्येष्टि संस्कार प्रकरण में किया है। मंत्र में मृत्यु पश्चात् आत्मा का फिर से शरीर धारण करने की बात आई है। कर्मों के आधार पर वह शरीर किसी भी योनि का हो सकता है — मानव, पशु या जड़ प्राणी। इस से हम आत्मा का मूर्तिमान् होना कहते हैं। अगर फिर से जन्म लेना ही है, तो मनुष्य कामना करता है कि वह मनुष्यि-योनि में ही जन्म ले, अन्य दो योनियों में नहीं। मानव शरीर प्राप्त करते ही वह दीर्घायु के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता रहता है। इस मानव तन की विशेषताएँ और विचित्रताएँ कुछ ऐसी हैं कि सब के सब इसी के पीछे लगे हुए हैं; इस शरीर के लिए क्या नहीं कर रहे हैं- अच्छे भी और बुरे भी। वेद का आदेश है कि मनुष्य अपने इस शरीर को अच्छी तरह सम्भाल कर रखे। वेद का यह भी आदेश है –

आयुर्वसान उप वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जातवेदः

अर्थात् ज्ञान को धारण करते हुए मनुष्य अपने जीवन काल को व्यतीत करे और शरीर को उत्तमता से रखे। हमारे वेद शास्त्रों ने इस मानव तन को बहुत बड़ा महत्व दिया है, परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति मानी है, सभी साधनों का धाम माना है तथा आत्मा को उनके लक्ष्य तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम समझा है। आत्मा चाहे कितनी भी शक्तिशाली हो परन्तु शरीर के बिना उसका कोई भी अस्तिव नहीं होता। ऋग्वेद १०.१६.८, इस शरीर के बारे में कहता है –

'इमग्ने चमसं मा जिहवरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम्।
एष यश्चमसो देवयानस्तस्मिन्देवा अमृता मादयन्ते।।'

अर्थात् – हे मनुष्य! तू अपने इस शरीर को अनेक उद्देश्यों से भ्रष्ट मत होने दे। यह शरीर सभी इन्द्रिय और सभी प्राणों का प्यारा आश्रय है। जीवात्मा के भोग का यह उत्तम साधन है और इसी में विद्वान जन अमरत्व याने कि मोक्ष को भी सिद्ध करते हैं। यह शरीर तो भोग और अपवर्ग का भी साधन है। हे मनुष्य! तू ऐसा समझ।

जिस जगदीश्वर ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है उसी ने पिण्ड अर्थात् इस मानव शरीर की भी रचना की है। विचित्र बात यह है कि ब्रह्माण्ड और शरीर, दोनों समगुण हैं, दोनों के तत्व एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। चरक शरीरस्थान अध्याय ५- श्लोक ३ में इस बात का स्पष्टीकरण करता है –

'षड् धातवः समुदिताः लोक इति शब्दं लभन्ते।' अर्थात् यह लोक, यह जगत छः धातुओं से मिला हुआ है - पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और छठा तत्व है अव्यक्र ब्रह्म याने कि परमात्मा। इसी प्रकार का संकेत उसी चरक शरीर स्थान में मानव शरीर के लिए भी दिया है – **'षड् धातवः समुदिताः पुरुष इति शब्दं लभन्ते।'** अर्थात् मनुष्य का शरीर भी छः धातुओं का संमुदाय है – पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और छठा तत्व है जीवात्मा। ब्रह्माण्ड और शरीर की जो पाँच समान धातुएँ हैं – पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश यही प्रकृति कहलाते हैं। निष्कर्ष यह है कि प्रकृति ही वह तत्व है जो ब्रह्माण्ड और पिण्ड में समन्वय स्थापित करता है।

उसी चरक ग्रन्थ के पाँचवे अध्याय में पिण्ड और ब्रह्माण्ड, जिसे विज्ञान Microcosm और Macrocosm कहता है, उनके समन्वय को प्रमाणित करता है। उस में लिखा है – मूर्तिमान् जगत् में स्थूल पृथिवी देखने को मिलती है । पुरुष का शरीर पृथिवी की ही तरह दिखता है और पृथिवी तत्व से ही बना है। जगत् में जल का प्रभाव है, पुरुष शरीर में क्लेदरूप जल है, अर्थात् गिलापन है। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार मनुष्य शरीर का छियासठ (६६%) प्रतिशत भाग जल ही है। जगत् में एक ओर अग्नि है, मनुष्य के शरीर में जठराग्नि है। जगत् में पूर्व- पश्चिम् को वायु गमन करती है; मनुष्य शरीर में प्राण अपान वायु का गमन है। मूर्तिमान् जगत् में एक आकाश है और शरीर में छिद्र- समूह रूपी आकाश है। जगत् का प्रकाशक ब्रह्मा है, शरीर की जीवात्मा। जो भी शरीरधारी परमात्मा द्वारा स्थापित शरीर और जगत के बीच के नियमों को भंग करता है वह भयंकर दुख का शिकार होता है। अतः उचित है कि मनुष्य पिण्ड और ब्रह्माण्ड के बीच एक आनन्दमय सन्तुलन बनाये रखे।

परमात्मा और प्रकृति के साथ मिलकर चलने के लिए ही मनुष्य का शरीर अनेक दिव्य गुणों और प्राण शक्तियों से युक्त है। इन में पाँच प्राण और पाँच उपप्राण मुख्य हैं। ये दस प्राण मनुष्य के शरीर में दिन रात कार्यरत रहकर जीवन प्रदान करते हैं। पहली प्राण शक्ति का नाम ही है 'प्राण' जो मनुष्य के आँख, नाक कान और मुख में विराजमान रहता है। 'प्राण' के इस कार्य क्षेत्र को 'सन तंत्र (Respiratory System) कहते हैं। दूसरा प्राण है 'अपान जो मनुष्य की गुप्तेन्द्रियों में रहता हैं और शरीर के भीतर से अशुहियाँ, मैल आदि बाहर निकालने का काम करता है। इसके कार्य क्षेत्र को उत्सर्जन तंत्र (Excretory system) कहते हैं। तीसरा है 'समान' प्राण जो मनुष्य के शरीर में अमाशय (Stomach) में रहकर अन्न को समान करके उनके तत्वों को पूरे शरीर में पहुँचाता है। 'समान' प्राण के कार्य क्षेत्र को पाचन तंत्र (Digestive system) कहते हैं। चौर्थ प्राण का नाम है 'व्यान' जो मनुष्य के हृदय से सम्बन्ध रखते हुए 'रक्त-संचारिणी-संस्थान' को चलाता है। इस कार्य क्षेत्र को (Circulatory system) कहते हैं। पाँचवा प्राण है 'उदान' जिसका कार्य क्षेत्र है सुषुम्णा नाड़ी, जिसे Carotid Artery कहते हैं। चिकित्सा शास्त्र में इसे Central Nervous system कहते हैं। उदान प्राण के अनेक कार्यों में एक यह है कि वह मनुष्य-लोक में कर्म के आधार पर आत्मा को पुण्य-लोक, पाप- लोक या मनुष्य लोक में ले जाता है। ये पाँच प्राण ही मनुष्य शरीर का संचालन करते हुए उसका समन्वय परमात्मा और प्रकृति को बनाये रखते हैं। पाँच उप प्राण भी हैं जो मनुष्य शरीर की रक्षा करते हुए शारीरिक विकारों से निवृति देते हैं- वे हैं – नाग, कर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय। इनके भी अपने अपने कार्य क्षेत्र होते हैं।

क्रमशः

ओ३म्

आर्य सभा मॉरीशस

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (५ - ८ दिसम्बर २०१३)

आदरणीय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते ।

सेवा में विदित हो कि **आर्य समाज के पंजीकरण की शताब्दी** के संदर्भ में आर्य सभा मॉरीशस एक **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन** का आयोजन बड़े भव्य रूप से **दिनांक ५ से ८ दिसम्बर २०१३** तक कर रही है।

आर्य समाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों और परिवारों से निवेदन है कि इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में तन, मन, धन से अपना सहयोग सभा को प्रदान करने की चेष्टा करें ।

****

International Arya Maha Sammelan 2013

Dear Members,

This is to inform you that the Arya Sabha Mauritius is organising an **International Aryan Conference to mark the Centenary celebration of the registration of Arya Samaj in Mauritius from the 5th December to 8th December 2013.**

All members of the Arya Samaj are requested to participate actively in this event and to contribute for the success of the same.

H. Ramdhony
Secretary

Moving towards sustainable development (Part 1)

Moving from the freezing winters of Europe towards bright and shining economies of Asia, further towards Africa lies the magnificent island of Mauritius. Mauritius inherited vast and colourful cultures and values from various corners of the world. Once a great writer did compare heaven to this wonderful island. Industrial development, tourism and agriculture have shaped the economy of this country making it one of the most business oriented and pacific countries in the African continent.

Globally the rise in development has resulted in giving a negative feature to the environment; rise in sea level, melting of icebergs, rise in temperature, unpredictable droughts and floods, emission of greenhouse gases. Pondering on these issues would be a waste of time! We need to tackle these issues and to look for solutions. So, this calls for urgent action! We all know that anthropogenic (human induced) actions have led to such environmental disasters which today pose a serious threat towards the existence of the planet.

Reviewing basic needs of survival could give a sign of hope to save the planet. Food is needed for survival, shelter to protect human life from natural calamities and clothing to cover and protect the body. Various types of crops are cultivated in Mauritius. The country has since long been an agriculture oriented country. From the sugar boom in the 80's and 90's to the production of selected vegetables and fruits for local consumption and exportation, the use of agrochemicals in agriculture has been prominent. These dangerous chemicals, when applied according to the recommended dosage, tend to control pests and diseases affecting a particular commodity, thus, in turn, leading to an increase in yield.

Agrochemicals have helped to attain food security but on the other hand have contributed towards environmental degradation. These chemicals pose serious threat to human life as well, inhaling or being in contact with these substances can cause deadly diseases such as cancer. Alternative means do exist: organic agriculture. One of the aspects of organic agriculture is the use of bio products instead of traditional chemicals. The table below will illustrate some of the aspects of traditional agriculture that could be replaced by organic means.

Traditional Agriculture
- *Use of chemical fertilizers*
- *Use of insecticides / pesticides to control pests*
- *Agrochemicals to control pests*
- *Tradition la sprinkler / overhead irrigation : 50-60% efficient*

Organic Agriculture
- *Use of manure and / or compost*
- *Use of insects / pest predators and conducting crop rotation*
- *Use of yellow sticky tape, neem based fertilizers*
- *Family drip irrigation : 90-95% efficient (energy and water saving)*

To be continued…..

Bhushan Chummun
BSc Agric, MSc Env pol (UK), M Env
Scientist / Environmentalist
(Member Mauritius Arya Yuvak Sangh)

WE ARE ONE HUMAN RACE

We are men and women first, before being Hindus, Buddhists, Christians and Muslims.
We are men and women first, before being Indians, Americans, Russians and Chinese.
We are human first, before being Easterners, Westerners, Northerners and Southerners.
We are made of the same ingredients: earth, water, fire, air and ether.
We are made in the same way: from seed to plant, from embryo to human.
We are born in the same way as all other living beings.
We have the same body organs and red blood running in our veins.
We have the same kind of growth and development, if given the same facilities.
We have the same growth and decadence: birth, death, disease and old age.
We have the same process: childhood, adolescence, adulthood and old age.
We have the same stages: celibacy, marriage and renunciation.
We have the same interests: desires, dreams, quest and fulfilment.
We all have father, mother, brothers, sisters and relatives.
We all have the same basic needs: food, sleep, procreation and preservation.
We all need food, water, heat, air and shelter to live.
We have the planet earth to live, to develop and to protect.
We are ONE, let us co-habit, share, experience, fulfil and enjoy.
We are ONE, let us live happily and die peacefully on this earthly paradise.

Dipnarain Beegun

Very emotional homage paid to Jaswantee Indranath

"For that, which is born, death is certain; and for the dead, birth is certain. Therefore grieve not over that which is inevitable."

Bhagavad Gita

My beloved wife, Jaswantee Indranath, born Jogee passed away on Friday 16th August 2013. I was informed of it from the S.S.R.N Hospital at 10.40 at night. The news of her death was not shocking to me as I knew that she could breathe her last at any moment because she was in a coma. The doctors at the I.C.U, despite their ultimate efforts could not save her from the clutches of death inevitable in everyone's life.

On Saturday 17th August 2013 a large number of relatives, friends and sympathizers from every nook and corner of the island came to my residence at Schoenfeld Road, Rivière du Rempart to express their sympathy. The representatives of several religious and socio-cultural organizations like Arya Sabha, World Hindi Secretariat, Hindi Pracharini Sabha, Hindi Sangathan, Hindi Sahitya Academy, Hindi Sahitya Parishad, Bhojpuri Speaking Union, Hindi Lekhak Sangh were present and expressed their heartfelt condolences to me. I am thankful to them all.

The Head Priest of Arya Sabha performed the funeral rites and paid homage to the deceased. Mr Satterdeo Peerthum, the Vice-President of Arya Sabha, Pandit Mooklall Lokman of Hindi Lekhak Sangh and Dr Laldeo Ancharaz paid their tribute to the departed soul. After shantipath, we left the cremation ground of Haute Rive.

I am the unique son of my parents. In 1966 I married Jaswantee and got four children – three boys and one girl. Raj is policeman, Shailendra is mentor in primary school, Prakash a graduate from India, is an education officer in State Secondary School, Omlata also is a graduate. My daughter-in-law, Rekha is officer at MRA, Aruna is GP teacher in Primary School and Uma is nurse at S.S.R.N Hospital. I have four grandsons and a granddaughter. My deceased life partner has left a prosperous family heritage. I have no regrets. May God bless her !

Indradev Bholah Indranath

In memory of my beloved wife

Life is neither eternal
nor a bed of roses.
It is mingled with prickles.
You were my life-partner
for forty-seven years.
Now you are no more,
but your blossomed face
endowed with charming smiles
will always be remembered.
Pious you were
and pious you will always be
May your soul rest in peace
and be reborn with divine powers
to complete your unaccomplished mission.
May God Bless You.

Yours Indradev

YOU REAP WHAT YOU PLANT

S. Bissessur, BA, Hons.

One should always do everything according to the dictates of dharma, i.e – after due reflection over right and wrong.

Fifth Principle of Arya Samaj

If you plant honesty, you will reap absolute trust.
If you plant goodness, you will reap friends.
If you plant humility, you will reap greatness.
If you plant perseverance, you will reap victory.
If you plant love and consideration, you will reap harmony.
If you plant hard work, you will reap resounding success.
If you plant forgiveness, you will reap reconciliation.
If you plant openness, you will reap intimacy.
If you plant patience, you will reap improvement.
If you plant faith, you will reap miracles.
If you plant true wisdom, you will reap intelligence.
If you plant vengeance; you will reap hostility and animosity.
If you plant sincerity, you will reap dignity.

In fact, in this world of suffering and toil, everybody wants to be somebody.

Everybody wants to be regarded and valued by others. In other words, everybody wants to be somebody. Once that piece of information becomes part of everyday thinking, you will gain incredible insight into why people do the things they do. And if you treat every person you meet as if he or she were the most important in the world, you will make him or her feel that he or she is somebody - to you.

In fact, nobody cares how much you know until he knows how much you care. Everybody needs somebody. Everybody can be somebody when somebody understands and believes in him.

रयिं दधातु चेतनीम् ।

(अथर्व० १.४.२१)

इन्द्र शक्तिवर्धक ऐश्वर्य दे ।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038